ये युग है बदलाव का...

- ब्र.कु. जगदीश,मा.आबू

शास्त्रों में चार युगों का वर्णन है, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। इन चारो युगों में चक्कर लगाने के बाद हमें एक ऐसे युग के साथ परमात्मा ने जोड़ा जिसमें हर क्षण, हर पल प्राप्तियाँ ही प्राप्तियाँ हैं। जिसे हमने पुकारा, हिमालय में ढूंढ़ा, चारो धाम की यात्राएँ की और जिसको पाने के लिए हमने तपस्याएँ की, वो स्वयं अभी हमारे साथ है, तो हमें उस अवसर का कितना लाभ ले लेना चाहिए! वो हमारे जीवन के साथ जुड़ गया, हमारा बोझ हर लिया। ना सिर्फ हमारा बोझ ले लिया अपितु हमें शक्तियाँ और बल प्रदान किया निरंतर आगे बढ़ने के लिए। ऐसे समय पर हम अपने आप को देखें कि जो भाग्यविधाता सबका भाग्य लिखता है, उसने हमारा भाग्य लिखने की कलम स्वयं हमारे ही हाथों में दे दी। तो देखिये हम क्या कर रहे हैं, उसका कितना लाभ उठा रहे हैं?

इनको हम कुछ बिन्दुओं से समझने की कोशिश करते हैं

1. यह युग हमें वो सबकुछ दिला सकता है, लेकिन लेने के लिए बुद्धि की एकाग्रता बहुत ज़रूरी है।

2. परमात्मा इसको लीप युग भी कहते हैं, क्योंकि इसमें हमको छोटे से समय में सबकुछ, माना अपने बुरे कर्म, बुरे विचारों का दान करना होता है, और उसी समय स्वर्गिक सुख की प्राप्तियाँ करनी होती हैं। होता थोड़े समय में ही है सबकुछ, क्योंकि जिस समय आपको समझ मिली, आपका जीवन बदल गया।

3. आज मनुष्य अति विकारों की चपेट में है, उससे निकलना भी चाहता है, लेकिन कोई न कोई कारण, चाहे मोह या लोभ वश निकल नहीं पा रहा। ऐसे समय में ही वो पतित-पावन हमसे हमारा सबकुछ लेकर हमें पतित से पावन बनाना चाहता है।

4. जहाँ जीवन से आप थक गये थे, उसने आपके पाँव दबाने का जिम्मा उठाया, अर्थात् आपकी बुद्धि जो विभिन्न तरह की बातों में फँसी हुई है, उसके कारण थक गई है, उसकी थकान मिटाने का जिम्मा परमात्मा ने स्वयं उठाया।

5. हम आत्मायें छोटी-छोटी स्थूल बातों में, स्थूल कार्यों में अपने आपको उलझाकर छोटी-छोटी प्राप्तियों से भरपूर कर रहे थे, और भरपूरता लाने में जो हमने विकर्म किये, उसका अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते! परमात्मा ने आकर हमें आत्मिक ज्ञान दिया, श्रेष्ठ ज्ञान दिया और कहा कि इसमें स्थित होकर तुम कर्म करो। कहा, प्राप्ति भी तुम्हारी, पहचान भी तुम्हारी और कोई पापकर्म भी नहीं।

6. दुनिया में जिसे लोग फरिश्तों की दुनिया कहते हैं, उसका दृश्यावलोकन परमात्मा ने हमारे समक्ष रखा है। हमारे आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने वो सबकुछ किया जिसे कोई आम इंसान सोच भी नहीं सकता, लेकिन उनसे करवाया स्वयं परमात्मा ने।

7. आज परमात्मा हमसे कहता कि आप एक कदम इस ओर बढ़ाओ, मैं हज़ार कदमों के साथ आपके साथ हूँ। ऐसा कौन कह सकता है, वही ना जो आपके बहुत नज़दीक हो, आपके बहुत करीब हो, उससे हमारा दु:ख, दर्द देखा नहीं जा सकता।

8. वो बस एक बात का इशारा देता है कि आप मेरे मार्ग पर चलकर तो देखो, आपको महान व सुप्रसिद्ध न कर दूँ तो कहना। प्रसिद्ध करने के लिए वो हमें बुला रहा है, और हम हैं कि एक कदम भी उठाने को तैयार नहीं। हम सभी आलस्य में पड़े हैं। आज जैसे दुनिया के लोग अपना डेली रुटीन करके घर में आकर बैठ जाते हैं, तो हममें और उनमें क्या अंतर है। कुछ तो अलग करो, कुछ तो नया करो, जिससे परमात्मा के दिल पर चढ़ो।

9. दुनिया बदल रही है, लोग बदल रहे हैं, परिस्थितियाँ बदल रही हैं, संबंध बदल रहे हैं, प्रकृति बदल रही है, अगर कोई नहीं बदल रहा है तो वो हैं हम और आप। कारण, हम दूसरों के बदलने का इंतज़ार कर रहे हैं। ये इंतज़ार आपको हमेशा करना पड़ेगा, क्योंकि संबंध हमसे है, समाज हमसे है, दुनिया हमसे है, परिवार हमसे है, परिस्थिति हमसे है, लेकिन हम इनसे नहीं हैं। अगर आप आने वाले समय में रोने से बचना चाहते हैं तो खुद पर फोकस करो। आप देखो, आप क्या कर रहे हो। आप दूसरों को देखने में इतना समय बिता रहे हो, जिसमें सबसे ज़्यादा वाट्स एप्प, यू ट्यूब, फेसबुक पर आपका सारा समय नष्ट हो रहा है, और ये सारी चीज़ें आपको उस परम सत्ता से विमुख करने के लिए ही हैं। तो जागो, उठो, और फिर ना रुको।

तपस्या के पथ पर...

- पेज 6 का शेष

करनी ही है। कर्म और योग साथ-साथ चले, ताकि कर्म हमें उलझाये नहीं और कर्म की अधीनता हममें चिड़चिड़ापन न लाये। अगर किसी तपस्वी को कोई क्रोध करता हुआ देखे तो उसको क्या कहेंगे -दुर्वासा ऋषि। वास्तव में ऋषि शब्द गलत है। दुर्वासा के साथ तो क्रोधी शब्द आना चाहिए। क्रोध दिनोदिन जवान होता जा रहा है, दूसरे शब्दों में कहें तो रावण जवान होता नज़र आता है। जब मनुष्य बूढ़ा होता है तो प्रैक्टिकल कर्म कम करता है और संकल्प बहुत चलाता है। हांथ-पांव तो चलता नहीं। लेकिन अनुभव ज़्यादा है तो क्रोध आ जाता है कि कहीं गलत न कर दे।

सहज भाव को अपनाएं

हमें अपने स्वभाव को सरल बनाने की आदत डालनी चाहिए। अगर इस कला को कोई सीख ले तो उसका जीवन सरल हो जाए। हमारा मन उलझा रहता है। अगर हमारा मन सरल हो जाए तो हमारी संकल्प शक्ति नष्ट होने से बच जाएगी। समस्या का भी समाधान होता चलेगा। जीवन को सरल करने के लिए मन को सरल करना ज़रूरी है। साथ ही यह चेकिंग करते रहें कि बातें हमारी संकल्प शक्ति को नष्ट तो नहीं करती? यह सबसे बड़ी शक्ति है। बाकी सब शक्तियां जैसे कि सहनशक्ति, समाने की शक्ति...आदि सब आ जाएंगी। कहीं कहीं, छोटी-छोटी बातों में संकल्प शक्ति का बड़ा नुकसान कर देते हैं।

लौकिक-अलौकिक जीवन सरल हो

साधना पथ पर हमारी तपस्या यथार्थ होगी तो हमारा जीवन सरल व सहज होता जाएगा। लेकिन देखने में आता है कि कइयों ने जीवन में तपस्या आरंभ की, वैसे-वैसे समस्या बढ़ी। इससे कई ब्राह्मण परेशान हुए। जैसे ही तपस्या की प्लानिंग की वैसे ही समस्याओं ने घेराव डाला। ऐसा भी होता है कइयों के जीवन में। एक मनोविज्ञान है या होमियोपैथी में दवाई देते हैं तो पहले बीमारी बढ़ जाती है, पीछे ठीक होती है। ठीक वैसे हमारी तपस्या प्रारंभ करते ही जो पाप के जर्म्स दबे हुए थे वह बाहर आने लगते हैं। पाप आया विदाई लेने, हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए और घबराकर तपस्या ही छोड़ दी कइयों ने। ऐसा होने पर घबराये नहीं, थोड़े समय के लिए ऐसा होगा। अगर समस्याएं बढ़ती देख किसी ने तपस्या छोड़ दी तो वह समस्या समाप्त नहीं हुई।

जीवन को सरल बनाएं

तपस्या हमारे जीवन को सरल बनाए। वह हमारे आनंद के लिए है। हमारी खुशी बढ़ती चले। मन-बुद्धि के भटकन से ऊपर उठ ईश्वरीय रसों का आनंद उठायें। सूक्ष्मता से अपने को देखें, निरीक्षण करें। अगर चेकिंग करेंगे तब पता चलेगा कि हमने कई किनारे पकड़े हुए हैं। सूक्ष्मता से निरीक्षण करें कि समस्या किनारों की वजह से तो नहीं। जिसके लिए ईश्वरीय महावाक्य हैं, किनारे हमारा साथ नहीं निभाएंगे, हमें वह सहारा नहीं देगा। जैसे किसी को अच्छा भोजन खाने के लिए चाहिए। अच्छा खाना तो ठीक है लेकिन भोजन खाने के पीछे हमारी शक्तियां नष्ट न हो रही हों। वह हमारा असली सहारा नहीं। ऐसे सहारों को समाप्त करना है। तपस्या में हमें चेक करना है कि कहाँ हमारी कर्मेन्द्रियां सहारों के रस में तो अटकी नहीं हैं। कौन-कौन से रस में हम लटके हुए हैं। उलझन के कारण क्या हैं? आज कल सुनने का रस बहुत हो गया है। इन्फॉर्मेशन बहुत ही नुकसान कर देती है। आज सभी घरों में टी.वी. आ गया है। यही माया की सूक्ष्म चाल है। इसके लिए बाबा ने कहा माया की चालबाज़ी का भी ज्ञान होना ज़रूरी है। जैसे हम संकल्प करें कि मैं आत्मा हूँ। तो मैं और मेरा, दोनों अलग स्पष्ट फीलिंग आये। आत्मा का दर्शन होता रहे। जिसका सहयोग भगवान कर रहा हो उनका सहयोग सारा संसार करेगा। तो भगवान हमारा है। यह नज़र आये, यही हमारी तपस्या है। यह जीवन उस परमात्म शक्ति के साथ मौजों में बीते, यही हमारी सेफ्टी का साधन होगा।

जयपुर-कमल अपार्टमेंट। नेत्र विशेषज्ञ तथा चिकित्सकों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. सोनू गोयल, ब्र.कु. स्नेह, ब्र.कु. स्वाति तथा अन्य।

दिल्ली-मजलिस पार्क। सेवाकेन्द्र पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. उर्मिला,सह संपादिका,ज्ञानामृत पत्रिका, भूपेन्द्र जैन, संपादक,सद्भावना संदेश, रोहताश योगी,सम्पादक,टैलेन्ट ऑफ इंडिया, अनिल जी,सम्पादक,जग उत्थान, सुरेन्द्र कोहली, अध्यक्ष,विपणन बोर्ड दिल्ली सरकार, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. शारदा तथा अन्य।

फरीदपुर-बरेली(उ.प्र.)। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अविनाश, आर.टी.ओ. ऑफिसर राजा जी, ब्लॉक प्रमुख रवि यादव, रमाशंकर दीक्षित, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. नीता तथा अन्य।

गुमला-झारखण्ड। सेवाकेन्द्र पर आने के पश्चात् कर्नल निलम्बर झा को ईश्वरीय साहित्य भेंट करने के उपरांत चित्र में उनके साथ ब्र.कु. शांति तथा पूर्व सैनिक सहदेव महतो।

तोशाम-हरियाणा। ट्रांसपोर्ट विंग के सफल सुरक्षित जीवन यात्रा रैली के दौरान ईश्वर जैन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए अभियान संचालिका ब्र.कु. कविता तथा ब्र.कु. मंजू।

हांसी-हरियाणा। 'सफल सुरक्षित जीवन यात्रा अभियान' के दौरान पूर्व मंत्री प्रो. छत्रपालजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. सुरेश,मा.आबू तथा ब्र.कु. कविता,मुम्बई।

अकरावाद-उ.प्र.। कृषि निवेश मेला/कृषक गोष्ठी में ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किये जाने पर 'शाश्वत यौगिक खेती' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् उप कृषि निदेशक अनिल कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. हर्षा, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. भारत तथा ब्र.कु. सत्यप्रकाश।